40

''खमीर से चौकस रहना''

(16:5-12)

गलील की झील के पार जाकर बैतसेदा में पहुंचने के बाद यीशु फिर से अपने चेलों को सिखाने लगा।

यीशु की चेतावनी (16:5, 6)

5चेले झील के उस पार पहुंचे, पर वे रोटी लेना भूल गए थे। 6यीशु ने उन से कहा, ''देखो, फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना।''

आयत 5. चिह्नों के बारे में फरीसियों और सदूकियों के साथ **यीशु** की चर्चा के बाद **चेले** प्रभु के साथ मगदन देश से नाव पर (15:39) **झील के उस पार पहुंचे।** वे बैतसेदा के इलाके में उतर गए (मरकुस 8:22)। **वे रोटी लेना भूल गए थे** और उनके पास नाव में केवल एक रोटी थी (मरकुस 8:14)। भाषा से संकेत मिलता है कि चेले सफर में आम तौर पर अपने साथ रोटी ले जाते थे (10:9, 10 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 6. यीशु ने अपने चेलों से कहा, **''देखो, फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना।**''मत्ती में पहले प्रभु ने ''खमीर'' के स्वभाव पर एक दृष्टांत बताया था (13:33 पर टिप्पणियां देखें)। खमीर का रूपक आम तौर पर बुराई के प्रभाव को फैलाने के प्रतीक के लिए इस्तेमाल किया जाता है (1 कुरिन्थियों 5:6-8; गलातियों 5:7-9)। यीशु चाहे फरीसियों और सदूकियों को गलील में पीछे छोड़ आया था, पर वह अभी भी उनके उस नकारात्मक प्रभाव पर विचार कर रहा था, जो यहूदी लोगों के ऊपर उनका था। इन गुटों के लोग अपने आप में भरोसा रखने वाले थे न कि परमेश्वर में। उन्होंने यीशु को नकार दिया था और उसके आश्चर्यकर्म के चिह्नों को नहीं माना था। जिस कारण वे लोगों के लिए ठोकर का पत्थर थे।

आयत 12 में ''खमीर'' की परिभाषा फरीसियों और सदूकियों की ''शिक्षा'' के रूप में की गई है। लूका में ''खमीर'' को ''कपट'' के साथ जोड़ा गया है (लूका 12:1)। यीशु ने अन्य पदों में और सतर्कता से यहूदी अगुओं के कपट का वर्णन किया। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों (मत्ती 5:20) को ''कपटी'' कहकर उनकी भर्त्सना की, जो दान करने, प्रार्थना करने और उपवास करने में सब कुछ मनुष्यों को दिखाने के लिए कर रहे थे (6:1-18)। मरकुस 12:38-40 में उस ने कहा:

> शास्त्रियों से चौकस रहो, जो बाजारों में नमस्कार, और आराधनालयों में मुख्य-मुख्य आसन और जेवनारों में मुख्य-मुख्य स्थान भी चाहते हैं। वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये अधिक दण्ड पाएंगे।

मत्ती 23:1-7 में यीशु की बातों में विशेषकर कठोर दण्ड की बात करते हुए शास्त्रियों के साथ फरीसियों का भी उल्लेख है। अध्याय 23 के शेष भाग में, वह उनके कपट को सामने लाता रहा (23:13-15, 23, 25, 27, 29)।

चेलों की नासमझी (16:7-10)

[7]वे आपस में विचार करने लगे, ''हम रोटी नहीं लाए। इसलिए वह ऐसा कहता है।'' [8]यह जानकर, यीशु ने उन से कहा, ''हे अल्प अल्पविश्वासियो, तुम आपस में क्यों विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? [9]क्या तुम अब तक नहीं समझे? क्या तुम्हें उन पांच हजार की पांच रोटी स्मरण नहीं, और न यह कि तुमने कितनी टोकरियां उठाई थीं? [10]और न उन चार हजार की सात रोटियां, और न यह कि तुमने कितने टोकरे उठाए थे?''

आयत 7. चेले यीशु की चेतावनी को गलत समझे, क्योंकि उन्हें लगा कि वह उन्हें इसलिए डांट रहा है क्योंकि वे **रोटी नहीं लाए** थे। उस ने चाहे अपने चेलों को देने के लिए इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण आत्मिक सबक देना था पर सांसारिक शब्दों के इस्तेमाल से चेलों की समझ में रुकावट पड़ गई।

आयतें 8-10. उनकी नासमझी के कारण उसे उन्हें **अल्प विश्वास** के लिए डांटने का अवसर मिल गया। प्रभु आम तौर पर अपने चेलों के लिए ''अल्प विश्वासियों'' उस नाम का इस्तेमाल करता था (6:30; 8:26; 14:31)। ''अल्प विश्वास'' की इच्छा नहीं की जानी चाहिए और व्यक्ति को बड़े विश्वास का ही लक्ष्य बनाना चाहिए, परन्तु निश्चय ही यह ''विश्वास नहीं'' या ''मुर्दा विश्वास'' से बेहतर है (याकूब 2:26)।

यीशु के प्रश्न उस की डांट को गम्भीर बना देते थे: **''क्या तुम अब तक नहीं समझे ...?''** मरकुस 8:17, 18 में इन प्रश्नों को विस्तार दिया गया है, ''क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते? क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया है? या आंखें होते हुए भी नहीं देखते, और कान रखते हुए भी नहीं सुनते? और क्या तुम्हें स्मरण नहीं?''

यीशु ने उन्हें वे दो आश्चर्यकर्म याद दिलाए, जो उस ने किए थे। एक तो **पांच हज़ार** को खिलाने का था (14:15-21), और दूसरा **चार हज़ार** को खिलाने का (15:32-39)। ये आश्चर्यकर्म केवल भीड़ के आकार से ही अलग नहीं किए गए, बल्कि उनमें इस्तेमाल की गई **रोटियों** (**पांच** बनाम **सात**) से अलग किए गए हैं। इसके अलावा बचे हुए टुकड़ों के सात **बड़े टोकरों** (*spuris*) के उलट बारह **टोकरों** (*kophinos*) से अलग बताया गया है।

यीशु उन्हें ये आश्चर्यकर्म याद दिला रहा था; परन्तु वह उन्हें यह भी बता रहा था कि यदि शारीरिक रोटी कम होने की बात ही हो तो वह नाव में बची एक रोटी को बढ़ा सकता था (मरकुस 8:14) या आवश्यकता पड़ने पर इसे बना भी सकता था। अपनी बातचीत में यीशु अपने चेलों को एक बड़े और अधिक महत्वपूर्ण सबक की ओर ले जा रहा था। उन्हें अपनी आवश्यकताओं की चिंता थी, क्योंकि जिसके लिए उस ने उन्हें परमेश्वर पर भरोसा रखने की आज्ञा दी, वे भूल चुके थे कि वास्तव में किस बात का महत्व है, उस सच्ची शिक्षा का जो परमेश्वर की ओर से मिलती है (देखें 6:33)।[1]

यीशु की चेतावनी दोहराई गई (16:11, 12)

[11]''तुम क्यों नहीं समझते कि मैंने तुम से रोटियों के विषय में नहीं कहा? परन्तु यह कि तुम फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहना।'' [12]तब उनकी समझ में आया कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं, पर फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से सावधान रहने को कहा था।

आयतें 11, 12. फिर उस ने पूछा, **''तुम क्यों नहीं समझते कि मैंने तुम से रोटियों के विषय में नहीं कहा?''** यह सुनिश्चित करने के लिए कि चेलों को समझ आ गई, यीशु ने **फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान** रहने की चेतावनी फिर से दोहराई। यहां पर उन्हें समझ आ गया कि वह कौन से गुटों की **शिक्षा** की बात कर रहा था (16:1, 6 पर टिप्पणियां देखें)। फरीसियों की हठधर्मी और सदूकियों की राजनैतिक पैंतरेबाजी वे बुराइयां थीं, जिन्हें धार्मिकता को पाने के लिए कभी इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।[2] मत्ती में इसका समानांतर पद सदूकियों के बजाय हेरोदेस की बात करता है (मरकुस 8:15)। चिह्न ढूंढ़ने वाले इस व्यक्ति ने मसीह को सदूकियों की तरह नकार दिया (लूका 23:8-12)।

टिप्पणियां

[1]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14-28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 460. [2]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 159.